Vol 7 Issue 3 Dec 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Sanjeev Kumar Mishra

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Awadhesh Kumar Shirotriya

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.oldror.lbp.world

REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2017

उच्च शिक्षा की चुनौतिया – दशा एवं दिशा

डॉ. असलम सईद
विभागाध्यक्ष वाणिज्य ए.के.एस. वि.वि. सतना (म.प्र)

प्रस्तावनाः–

शिक्षा मनुष्य के होने का बोध है, यह एक ऐसा हुनर है जिसके बूते मनुष्य संवेदनशील सृजनशील एंव विवेकी होती है।

हितोपदेश में नारायण पण्डित ने लिखा है कि ''संसार के सब द्रव्यों से उत्तम धन विद्या ही है क्योंकि यह न चुराई जा सकती है न इसका कोई मेल ही हो सकता है और न ही कभी इसका क्षय हो सकता है।

जिस प्रकार से नदी जो नीचे बहती है किन्तु फिर भी वह स्वाश्रितो को समुद्र से मिला देती है ठीक इसी प्रकार विद्या यदि निम्न स्तर के व्यक्ति के पास हो तो भी वह मनुष्य को राजा जैसे उच्च पद तक पहुँचा देती है।

उच्च शिक्षा का उद्देश्यः –

शिक्षा मानव के सामाजिक जीवन की आधारशिला है शिक्षा का उद्देश्य मानवीय गुणों का विकास कर राष्ट्रीय प्रगति करना एवं सर्वागीण प्रगति करना होता है और इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये उच्च शिक्षा के आधार पर ही कोई भी राष्ट्र विश्व पटल पर अपनी भागीदारी सुनिश्चित करता है।

शिक्षा के सभी अभिकरण सम्पूर्ण विश्व के किस रूप में अपनी पहचान दर्ज करायें यह वहां के स्तर और विद्यार्थी के व्यक्तित्व एवं चरित्र पर निर्भर करती है जबकि विद्यार्थी का ज्ञान स्तर, प्रणाली एवं समूचे तंत्र पर आधारित होता है।

किसी भी राष्ट्र की उच्च शिक्षा वहाँ की सस्कृति एंव मानव जाति के उत्थान की रीढ़ होती है, जिस प्रकार से भौतिक शरीर का मेरूदण्ड अर्थात रीढ़ को दृढ़ता शरीर के सभी अंग प्रत्यंग प्रदान करते है उसी प्रकार उच्च शिक्षा भी महत्वपूर्ण है।

भारत सहित सम्पूर्ण विश्व ने उच्च शिक्षा एवं ज्ञान तथा अपनी इच्छाशक्ति के बल पर सभी ग्रहों तक अपनी उपस्थिति दर्ज करा कर यह सिद्ध कर रहा है कि उसकी शिक्षा एवं ज्ञान आज जिस ऊँचाई तक पहुंच गये है। शिक्षा के दम पर हम आज आकाश छू रहे है।

शिक्षा के दो पक्ष होते है एक आन्तरिक पक्ष जिसमें पाठ्यक्रम का समावेश होता है दूसरा बाहय पक्ष जिसमें शिक्षण पद्धति आती है, ये दूसरे पक्ष का निर्धारण पहले पक्ष पर निर्भर करता है अर्थात पाठ्यक्रम से ही पद्धति निर्धारित होती है, क्या पढ़ना है यह इस पर निर्भर करता है कि उसे कैसे पढ़ाया जाना है ? विषय के हिसाब से विधि बदल जाती है इसलिऐ शिक्षा पर विचार करते समय यह आवश्यक हो जाता है कि इस बात पर विचार किया जाऐ कि वास्तव में पढ़ाया क्या जाना चाहिऐ अर्थात पाठ्यक्रम क्या होना चाहिये। यही प्रश्न ही शिक्षा का उद्देश्य तय करता है।

बहुत से प्रश्न हमारे सामने खड़े होते है जैसे (1) हमें शिक्षा क्यों चाहिये। (2) हम शिक्षित होकर क्या करेगें (3) शिक्षा हमारे अंदर कौन से परिवर्तन लाऐगी (4) शिक्षा से हमारी कौन सी समस्या का समाधान हो पाऐगा।

यहां प्रश्न आज भी उतना हो प्रासंगिक और महत्वपूर्ण है जितना उस दिन रहा होगा जिस दिन पहली बार किसी ने शिक्षा की आवश्यकता महसूस की होगी और इसका उत्तर आज भी वही होगा जो उस दिन रहा होगा कि शिक्षा मनुष्य को विकसित करती है उसे सभ्य और सामाजिक बनाती है।

तात्पर्य यह है कि शिक्षा मनुष्य को सही ढंग से जीने की कला सिखाती है जीने का सही ढंग क्या है इसे कोई पूर्णतया परिभाषित नही कर पाया किन्तु इतना तय है कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य सही मनुष्य को विकसित करना है। यहाँ सही मनुष्य से आशय एक ऐसे मनुष्य से है जो सभ्य हो सुसंस्कृत हो सामाजिक हो और इन सब से मुख्य यह है कि वह सर्वहित कामी हो।

नये निर्माण के लिऐ, नये भविष्य के लिऐ शिक्षा को भी बिल्कुल नया करना पड़ेगा विकास बाजार, विज्ञापन , औद्योगीकरण, उदारीकरण, विश्वव्यापीकरण जैसे तमाम शब्दों के जाल से निकलकर हमें शिक्षा को नये अर्थबोध से मुक्त करना होगा अर्थात जर्जर ढांचे को बदलकर नया ढांचा बनाना होगा।

सारांश यह है कि शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जो बिना किसी संघर्ष के समाज में परिवर्तन ला सकता है। शिक्षा मानव की भावनाओं एंव सोच में सकारात्मक परिवर्तन कर देती है। उच्च शिक्षा भारतीय शिक्षा प्रणाली का शीर्षस्थ बिन्दु है इसका उद्देश्य राष्ट्रीय जीवन के निर्माण हेतु ज्ञान संवर्धन के साथ – साथ मानव संसाधनों का भी विकास करना है जो उच्च शिक्षा के वर्तमान स्वरूप पर निर्भर करता है।

उच्च शिक्षा की दशा :–

भारत में उच्च शिक्षा की वर्तमान दशा पर विचार किया जाऐ तो यह बात सामने आते है कि यहां उच्च शिक्षा की दशा उतनी बेहतर नही है जितनी अपेक्षाकृत होनी चाहिये, सरकार के द्वारा विभिन्न प्रकार की रियायते, सुविधाऐ दी जा रही जिससे उच्च शिक्षा की दशा में सुधार हो मगर एक आंकलन ये है कि स्कूल शिक्षा में पंजीकृत कुल छात्रों के अनुपात में मात्र 15: छात्र ही उच्च शिक्षा में पंजीकृत होते है शेष किन्ही – किन्ही कारण से या तो उच्च शिक्षा में जाते नही या जाते भी है तो अपनी पढ़ाई को बीच में ही छोड़ देते है। इस प्रकार छात्रों का रूझान का उच्च शिक्षा में कम होना भी एक गम्भीर समस्या है, बल्कि यह कहा जाऐ की एक गम्भीर चुनौती है तो ज्यादा बेहत्तर होगा।

इस समस्या के अलावा उच्च शिक्षा की निम्न गुणवत्ता भी कही न कही उच्च शिक्षा की दशा को प्रभावित करती है। सयुंक्त राष्ट्र महासंघ के द्वारा किये गये सर्वेक्षण में भारत के नाम मात्र के उच्च शिक्षा संस्थान 100 के रैंक की परिधि में आये बाकी शिक्षा संस्थान इस रैंक को पाने में असमर्थ रहे तो निम्नगुणवत्ता भी भारत के लिए एक गंभीर चुनौती है।

यदि ध्यान से देखा जाए तो भारतीय समाज में वर्तमान में असमानता और भेदभाव इस कदर व्याप्त है कि जिसकी कोई पराकाष्ठा नही है हर ओर असमानता हर ओर भेदभाव अपने पांव पसारे हुये है।

जिस तरह देश में सामाजिक वर्गीकरण है ठीक उसी प्रकार उच्च शिक्षण संस्थानों का वर्गीकरण हो गया है जहां पर एक निर्धन वर्ग के छात्र की शिक्षा मे और एक विशिष्ट वर्ग के छात्र की शिक्षा में बहुत अंतर आ गया है जो एक दूसरे के ठीक विपरीत है।

उच्च शिक्षा के इस व्यापारीकरण के चलते निर्धन वर्ग के छात्रो के लिऐ उच्च शिक्षा विशेषतः बेहतर उच्च शिक्षा प्राप्त कर पाना भी एक चुनौती से कम नही है। भाषा का विभेद अर्थात हिन्दी माध्यम के छात्रो एवं अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के भाषा के चुनाव भी एक समस्या सी प्रतीत होती है क्योंकि अंग्रेजी भाषा माध्यम को चुनने वाले छात्रों की तुलना में हिन्दी भाषी क्षेत्रों के छात्रों के लिऐ राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में अपना स्थान बना पाना अपेक्षाकृत कठिन होता है।

तात्पर्य यह है कि ऐसे कुछ कारण उत्पन्न हो गये है जो भारत मे उच्च शिक्षा को उस स्तर तक नही पहुंचा पा रहे जहां कि वास्तव में इसे होना चाहिये इसमें कुछ कारण निम्ननुसार समझाये जा सकते ही जैसे –

(1) उच्च शिक्षा में सांस्थानिक चरित्र में बदलाव।
(2) विकेन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था के कारण उच्च शिक्षा में निजीकरण और अनिश्चितता की वृद्धि होना।
(3) पाठ्यक्रम एंव पाठ्यचर्या में परस्पर तालमेल का अभाव।
(4) उच्च शिक्षा में पूंजीवादी अर्थव्यवस्था से निःसृत राजनैतिक महत्वाकांक्षाओं का वर्चस्व।
(5) उच्च शिक्षा में स्वायत्तता एंव स्वशासिता का अभाव।
(6) नैतिकता, उत्तरदायित्व संवेदनशीलता, कठोर परिश्रम जैसे उच्च शिक्षा के आधारभूत उपादानों की जगह सिर्फ धन कमाने की मानसिकता को बढ़ाना तथा अर्थोपार्जन को उसका प्रमुख प्रयोग मान लेना।
(7) उच्च शिक्षा में सर्वमान्य, सर्वग्राह्य एवं सर्वस्वीकृत प्रतिमानों का अभाव ।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान :–

उच्च शिक्षा में अनुसंधान के क्षेत्र पर बड़ा महत्व दिया जा रहा इस सम्बंध में सरकार लगातार प्रयासरत् है, और हर वो जरूरी कदम उठाये जा रहे जिससे अनुसंधान को बढ़ावा मिले, साथ ही अनुसंधान के क्षेत्र में जिस प्रकार से पारदर्शिता लाई जाऐ और जिस प्रकार से डाक्टरेट की डिग्री का फर्जीवाड़ा रोका जाए, इस मुद्दे पर सरकार कड़े कदम उठा रही और नियमों में परिवर्तन भी किया गया।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने पी.एच.डी. एवं एम.फिल न्यूनतम मापदण्ड प्रक्रिया विनियम 2009 के नाम से भारत सरकार के गजट में 17 जुलाई 2009 को प्रकाशित किया जिसमें यह निर्णय किया गया कि पत्राचार माध्यम से की गई पी.एच.डी. एवं एम.फिल को उच्च शिक्षा में सहायक प्राध्यापक नियुक्ति की अर्हताये मान्य किया जाए।

उच्च शिक्षा में शोध को बढ़ावा देने एवं गुणवत्ता को बढ़ाने के नाम पर निम्नलिखित परिवर्तन किये ये।
(1) सन् 1991 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा उच्च शिक्षा में अध्यापन कार्य हेतु 'नेट' की अनिवार्यता कर दी गई।
(2) सन् 2000 में रस्तोगी कमेटी का रिर्पोट जिसमे चैण्क की डिग्री को अध्यापन कार्य हेतु सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई।
(3) सन् 2002 – हाईकोर्ट के तीसरे निर्णय के पश्चात् पुनः विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने नियमों में आंशिक संशोधन करते हुऐ सन् 2002 तक पी.एच.डी. उपाधि प्राप्त करने के उद्देश्य से शोधग्रंथ जमा करा चुके शोधार्थियों को 'नेट' की अनिवार्यता में छूट प्रदान की गई ।
(4) सन् 2006 में विश्वविद्यालय आयोग द्वारा अध्ययन कार्य हेतु पी.एच. डी व एम. फिल डिग्री को पुनः मान्यता।
(5) सन् 2006 में एक बार पुनः नियमों में व्यापक फेरबदल करते हुये अध्ययन कार्य हेतु एम. फिल एवं पी.एच. डी. डिग्री नियमित शोधार्थी के रूप में प्राप्त करना अनिवार्य एवं मान्य किया गया जबकि पत्राचार के माध्यम से प्राप्त की गई एम.फिल एंव पी.एच.डी. की डिग्री को अमान्य घोषित कर दिया गया है विनियमन 2009 के आने के बाद पत्राचार द्वारा प्राप्त डिग्री की मान्यता समाप्त कर दी गई।

उच्च शिक्षा की चुनौतिया एवं सुझावः– 21वीं सदी की शिक्षा उपभोक्तावाद को बढ़ावा देने वाली होती जा रही है जिस प्रकार का विज्ञापन एक बाजार भौतिक वस्तुओं के विक्रय के लिये बढ़ता जा रहा ठीक उसी प्रकार का बाजारवाद शिक्षा परिसरो में फैल चुका है।

प्रत्येक शिक्षा परिसर में छात्रों को लुभाने अपनी ओर आकर्षित करने के लिऐ हर स्तर पर प्रयोग किये जा रहे है अर्थात् हम ऐसी शिक्षा के दल – दल मे धसे जा रहे है जो हमें हृदयहीन, आत्महीन व लाचार बनाये जा रही है, हमारे आदर्श हमसे कोसो दूर छूटते चले जा रहे और हम लगातार आत्मनिर्भर बनने की कोशिश से परजीविता की ओर बढ़े जा रहे है। वर्तमान समय में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में जो चुनौती सबसे बड़ी है वह है गुणवत्ता की कमी, भारत में उच्च शिक्षा के गुणवत्ता में कमी का मुख्य कारण योग्य एवं निष्ठावान प्राध्यापकों की कमी का होना है, विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों एवं उच्च शिक्षा के अन्य संस्थानों की नियुक्तियों में भाई – भतीजावाद एवं घटिया राजनीतिक प्रभाव ने उच्च शिक्षा के गुणवत्ता में कमी पैदा किया है।

यद्पि नई तकनीक जैसे रिकार्डप्लेयर, रेखाचित्र, स्थिर चित्र , प्रादर्श फिल्म, टेलीविजन शैक्षिक यात्रायें, इन्टरनेट, एलसीडी प्रोजेक्टर आदि का वर्तमान समय में गुणवत्ता बढ़ाने में विशेष योगदान है, किंतु ये पर्याप्त नही है दोनो पक्षों का मजबूत होना आवश्यक है इतना होने के बाद भी हम उस लक्ष्य को प्राप्त नही कर पा रहे जिसे पाने के उद्देश्य से हम अपनी शक्ति और क्षमता दोनों का प्रयोग कर रहे।

वर्तमान समय में उच्च शिक्षा इतनी महंगी हो गई है कि हर को प्राप्त हो पाये ये सभंव नही है और जिन लोंगो ने उच्च शिक्षा प्राप्त भी कर लिया है उन्हें आसानी से रोजगार प्राप्त नही हो पाता।

इस बढ़ती हुई बेरोजगारी और घटते हुये रोजगार के अवसरो के कारण युवा पीढ़ी में भटकाव, निराशा, और अवसाद की भावना में वृद्धि हुई है लोग अपने अनिश्चित भविष्य के कारण काफी चिन्तित एंव परेशान रहते है। शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात भी यदि कोई व्यक्ति आत्म निर्भर न बन जाये और समाज में उसकी दशा एवं स्थिति दयनीय हो जाऐ तो फिर शिक्षा व्यर्थ हो जाती है और उसका महत्व नही रह जाता। वस्तुनिष्ठता एवं विश्वनीयता का पूर्ण रूपेण अभाव वर्तमान शिक्षा प्रणाली में दिखाई पड़ रहा है, वास्तव में शिक्षक ही शिक्षा की क्रियाशील ईकाई है अतः समय – समय पर शिक्षको का मूल्यांकन किया जाऐ तथा उनके मेधावी एवं परिश्रमी होने पर उन्हे सराहा जाऐ।

भारत की सधारण जनता परम्परागत शिक्षा को आज भी रोजगार का साधन संमझती और मानती है परन्तु इस वर्तमान दौर में रोजगार की स्थिति में बहुत परिवर्तन हो गया है, अब वे दिन नही रहे जब परम्परागत शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात रोजगार प्राप्त हो जाता था। उच्च शिक्षा का विस्तार तो हुआ है किन्तु ये बहुत अनियोजित विस्तार है क्योंकि जिस हिसाब से उच्च शिक्षा को आंकड़ों में वृद्धि हुई है, उस अनुपात में नौकरी के अवसरों में वृद्धि नही हो पा रही है।

लेकिन यह कहना गलत नही होगा कि इन सब बातों के बाद भी उच्च शिक्षा प्राप्त करने वालों की संख्या में लगातार वृद्धि होती जा रही है।

उच्च शिक्षा के शैक्षाणिक स्तर में सुधार लाने एवं शिक्षा को रोजगार मूलक तथा समाजोपयोगी बनाने हेतु निम्नांकित सुझाव दिये जा सकते है–

(1) उच्च शिक्षा मूल्यों पर आधारित होनी चाहिये।
(2) आने वाले समय का अध्ययन करके के भविष्य में किस प्रकार के रोजगार की मांग संभावित है, उसी मांग के अनुरूप शिक्षा दिये जाने की व्यवस्था होनी चाहिये।
(3) शिक्षा व्यवस्था गतिशील होनी चाहिये परन्तु उसमें थोड़ा सा लचीलापन हो।
(4) ऐस वर्ग जो उच्च शिक्षा प्राप्त नही कर सकता था जो समर्थ नही है ऐसे वंचित वर्ग के छात्रों हेतु निःशुल्क उच्च शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिये।
(5) शिक्षण पद्धति में राष्ट्र हित एवं समाज हित दोनो को समाहित किया जाना चाहिये
(6) शिक्षा व्यवस्था इस प्रकार की हो कि वह व्यक्ति को नैतिकता के उच्च स्तर तकपहुँचा देने में सक्षम हो।
(7) उच्च शिक्षा में गुणवत्ता पर सबसे अधिक ध्यान देना होगा।
(8) शैक्षाणिक संस्थाओं को उपभोक्तावाद, बाजारवाद, एवं भ्रष्टाचार से मुक्त रखना अत्यंत आवश्यक है।
(9) उच्च शिक्षित प्रतिमाओं को विदेश जाने से रोकना होगा, जिससे की उनकी बौद्धिक क्षमता एवं योग्यता का उपयोग अपने देश में ही किया जा सके।
(10) उच्च स्तरीय शोध सामग्री का सृजन किया जाना चाहिये।
(11) शिक्षकों की लगातार प्रशिक्षित कराते रहना होगा, ताकि वे वर्तमान शिक्षा प्रणाली एवं पाठ्यक्रम के अनुसार अपने आपको ढाल सके अतः शिक्षकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था होनी चाहिये।
(12) छात्रों को भविष्य में क्या करना है कैसे करना है, किस विषय या रोजगार का चुनाव करना है, किस प्रकार से लक्ष्य से निर्धारित करना है और कैसे उस लक्ष्य को प्राप्त करना है, इन सबके लिये एक विषय के रूप में प्रतिदिन एक कक्षा का संचालन किया जाना चाहिये ताकि छात्र कैरियर कांउसिलिग के पाठ्यक्रम से अवगत हो सके। यदि इसमें छात्र के साथ – साथ अभिभावक की भी हिस्सेदारी हो जाऐ तो यह अत्यंत लाभदायक हो सकता है।

मध्य प्रदेश एवं उच्च शिक्षाः–

महाविद्यालयीन शिक्षा के क्षेत्र में मध्यप्रदेश का महत्वपूर्ण एवं गौरवशाली स्थान है। अतीत पर दृष्टि डालें तो ज्ञात होता है कि उज्जैन में सांदीपनी आश्रम और धार की भोजशाला उच्च शिक्षा के बड़े केन्द्र थे, यहां दूर – दूर से विद्यार्थी अध्ययन के लिये आते थे।

यदि आधुनिक उच्च शिक्षा की बात करे तो डा. हरीसिंह गौर वि. वि. सागर, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर, विक्रय विश्वविद्यालय उज्जैन देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इन्दौर, जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर, अवधेश प्रताव सिंह विश्वविद्यालय रीवा और बरकत उल्ला विश्वविद्यालय भोपाल काा उच्च शिक्षा के विकास में अभूतपूर्व योगदान रहा है।

इसके अतिरिक्त भी राज्य में अन्य विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा का केन्द्र है जैसे पत्रकारिता एवं जनसम्पर्क सम्बंधी विषयों की विशेषता के लिऐ माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय भोपाल, कृषि सम्बधी विषयों की विशेषता के लिये जवाहर लाल नेहरू कृषि वि.वि. भोपाल, विधि सम्बंधी विषयों की विशेषता के लिऐ राष्ट्रीय विधि संस्थान महाविद्यालय भोपाल, इन्जीनियरिंग सम्बधी विषयों की विशेषता के लिये राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय इत्यादि।

वर्तमान संन्दर्भ में मध्यप्रदेश का इन्दौर राज्य में उच्च शिक्षा का सबसे बड़ा अध्ययन केन्द्र है जहाँ मध्य प्रदेश के अलावा आस पास के राज्यों के विद्यार्थी में अध्ययन के लिये आते है एक अनुमान है कि इंदौर में प्रतिवर्ष 1 लाख 25 हजार विद्यार्थी उच्च शिक्षा के पहुंचते है।

निष्कर्ष–

किसी देश विशेष की उच्च शिक्षा का लक्ष्य इस देश की स्वयता, परम्परा इतिहास, भूगोल व परिस्थितियों को ध्यान में रखकर बनाई जानी चाहिये इस दृष्टि से उच्च शिक्षा में वैज्ञानिक, औद्योगिक और प्रौद्योगिक विकास की मांगों को पूरा करने की क्षमता होनी चाहिये।
उच्च शिक्षा के सन्र्दभ में प्रजातांत्रिक मूल्यों और समाजवादी समाज की स्थापना जैसी मुख्य हितों को ध्यान में रखकर भविष्योन्मुखी दृष्टिकोण अपनाये जाने की अत्यन्त आवश्यकता है।

उच्च शिक्षा किसी देश की न केवल आर्थिक व्यवस्था की रीड़ होती है बल्कि वह उसके सामाजिक चितंन की बुनियाद, सांस्कृतिक बनावट की समझ और राजनीतिक प्रतिष्ठा का भी परिचायक होता है।

इस आधार पर यदि देखा जाये तो विश्व स्तर पर पश्चिम के देशों ने बाजी मारी हुई है ऐसा अचानक नही हुआ कि दुनिया के शैक्षाणिक मानचित्र पर अमेरिका, इंग्लैण्ड, जैसे पश्चिमी देशों के विश्वविद्यालयों और संस्थाओ का वर्चस्व है। इसा दृष्टि भारत थोड़ा पीछे चल रहा है, हमारे देश में भी उच्च शिक्षा के स्तर पर आमूल चूल परिवर्तन की आवश्यकता है।
स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर से लेकर पी.एच.डी स्तर तक प्रवेश पाठ्यक्रम और प्रणाली में विभिन्न सुधारों की आवश्यकता है।

वास्तव में उच्च शिक्षा को शिखर तक पहुंचाने के लिये एक केन्द्रीकृत मॉडल की आवश्यकता है साथ ही उच्च शिक्षा को पारदर्शी बनाने की भी नितांत आवश्यकता है।

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है उच्च शिक्षा में अभी बहुत सी चुनौतियां है जिन्हे पूरा किये बिना हम उच्च शिखर तक नही पहुंच सकते जहां पर आज अन्य पश्चिमी देश विकास करके पहुंच गये है। अनुमान है कि अगले पांच वर्षो में विश्व की 25: श्रम शक्ति भारत में होगी और अगर ये श्रम शक्ति प्रतिभाशाली और योग्य हुये तो भारत आर्थिक महाशक्ति बन जाऐगा। उच्च शिक्षा के मात्रात्मक प्रसार के साथ – साथ उसका गुणात्मक प्रसार भी किया जाना जरूरी है।

सन्दर्भ सूची:–

(1) भारत में शैक्षिक व्यवस्था का विकास एवं समस्याऐ श्रीमती आर के. शर्मा एवं श्री कृष्ण दुबे।
(2) भारतीय शिक्षा का विज्ञान एवं समस्या डॉ. महावीर गुप्ता एवं डा. ममता

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com